

तीसरे तिल को ज्योत का मंडल और ज्योत निरंजन भी कहते हैं। मुसलमान इसे अल्लाह कहते हैं, हिन्दु इसे ईश्वर और परमात्मा कहते हैं। गीता में कृष्ण भगवान ने अर्जुन को इसी जगह पर विराट स्वरूप दिखाया था। यह सूक्ष्म देश का हेडक्वार्टर है, सब इंतजाम इस जगह से ही होते हैं।

जब वैरागी आत्मा गुरु के आगे भजन बोलती है तो कई बार जुबान बंद भी हो जाती है, आँखों से पानी आता है लेकिन जब वह समुंद्र की तरह उछलता है तो उसकी कोई सीमा नहीं होती। जब विरह भरे शब्द बाहर आते उस समय हुजूर की आँखों से अपने आप ही पानी बहने लगता था। आपका दिल भर आता था, हुजूर सावन सिंहाली की याद ताज़ा हो जाती थी।

गुरु लोगों ने काफी प्रेरित किया कि आप आश्रम किसी शहर के पास बनाएं। अगर आपमें हिम्मत नहीं तो हम आश्रम बनवा देंगे आपको आने की ज़रूरत नहीं। ग्रुप में बहुत से प्रेमी आते हैं जो इस यात्रा का जिक्र करते हैं कि यह काफी लम्बी और कठिन यात्रा है।

अमृतदला

474

लम्बी और कठिन यात्रा

हम दिन-रात जिसका यश गाने में लगे हुए हैं। जिन्हें हम अपनी आत्मा का परमात्मा समझते हैं उन्होंने भी अपनी बीमारी के दिनों में इसी रास्ते पर सफ़र किया है।

आपके यहाँ आने से कई दिन पहले हम तैयारी करने में लग जाते हैं। आपको यह भी मालूम है कि यहाँ पहुँचते ही आपको सारी सहूलियतें मिलेंगी लेकिन उस आत्मा के परमात्मा कृपाल के लिए तो यहाँ कोई सहूलियत नहीं थी। यह भी मालूम नहीं था कि वह किस हालत में बैठा मिलेगा लेकिन उन्हें इतना ज़रूर मालूम था कि मैंने बिठाया है वह बाहर नहीं जाएगा।

आप सोचकर देखें, हमारे गुरुदेव ने जिस रास्ते पर चलने में झिझक न की हो; वे कभी नहीं सोचते थे कि मैंने यहाँ आकर आराम करना है, अपना काम किया और लौट गए लेकिन हमारी कितनी-कितनी शिकायतें हैं।

मैं आपको तीसरे तिल के बारे में बताया करता हूँ कि यह तीसरा तिल हमारे असली घर का रास्ता है, हमारी शुरुआत ही यहाँ से होती है। सतसंगी को सुबह प्रेम-प्यार से उठना चाहिए। दिन में अपना काम करें। रात भर सोकर सुबह तीन बजे उठें, पेट को खाली करें और अपने भजन-अभ्यास में बैठ जाएं। दोनों आँखों के थोड़ा सा ऊपर भौहों के बीच में तीसरा तिल है। आप इस जगह लगातार दो से ढाई घंटे सिमरन करें, तीसरे तिल पर पहुँचें।

तीसरे तिल को ज्योत का मंडल और ज्योत निरंजन भी कहते हैं। मुसलमान इसे अल्लाह कहते हैं, हिन्दु इसे ईश्वर और परमात्मा कहते हैं। गीता में कृष्ण भगवान ने अर्जुन को इसी जगह पर विराट स्वरूप दिखाया था। यह सूक्ष्म देश का हेडक्वार्टर है, सब इंतजाम इस जगह से ही होते हैं।

बाबा जयमल सिंह जी ने सावन सिंह से हमेशा यही कहा,
“जब इस जीव को नाम मिल जाता है यह सचखंड का हकदार
हो जाता है। एक शर्त है कि जीव भूलकर सपने में भी सतगुरु को
इन्सान न समझे बल्कि उसे इन्सानों को जेल से निकालने वाला
दाता समझे, खुद मालिक ही जीव को लेने के लिए आया है समझे।

हाँ भई! मैं हर ग्रुप में हमेशा ही आपको दो-तीन बातें याद करने के लिए प्रेरित करता हूँ कि अपने मन को शान्त रखना है। अभ्यास को बोझ नहीं समझना। अभ्यास में बैठकर मन को दुनिया की तरफ़ भटकने नहीं देना और मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करना है। सतसंगी इन बातों को सदा याद रखकर चलें तो हमारा दुनियावी फायदा भी होगा और परमार्थ में तो फायदा ही फायदा है।



हर सतसंगी के लिए एक शर्त रखी जाती है जिसे सन्त हमेशा सतसंग में बताते रहते हैं कि अगर आप अभ्यास नहीं कर सकते तो सन्तों पर श्रद्धा और भरोसा रखें। कम से कम उनसे प्यार तो करें और वे जो कहते हैं उसे करें। गुरु को भूलकर भी इन्सान न समझें। गुरु इन्सान बनकर ही हम रोगियों को छुड़वाने के लिए इस संसार में आते हैं।

आशा करते हैं कि आप भी इस जगह से यही प्रेरणा लेकर जाएं कि हम भी गुरु का हुक्म मान सकें और सन्तों से सच्चा प्यार कर सकें। दिल से दिल की राह बना सकें।

आप लोग यह आशा लेकर गुफा में जाएं कि हमारे गुरुदेव ने जो शिक्षा दी है हम उस पर ज़रूर अमल करेंगे अपनी जिंदगी को पवित्र बनाएंगे, सिमरन करेंगे ताकि वह दया का सागर हमारे ऊपर अपनी दया करके हमें रुहानियत से भरपूर कर दे।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि यह जगह आम लोगों के आने-जाने के लिए नहीं है। यह दयालु कृपाल का ही हुक्म था कि जो लोग यहाँ आठ या दस दिन अभ्यास करें, वही इस पवित्र गुफा के दर्शन करने के हकदार हैं। आप कहा करते थे, "यहाँ किसी ने सोना नहीं, यहाँ किसी किस्म का बुरा ख्याल नहीं करना; यह मालिक की जगह है मालिक को ही सोचना है।

पहचान सकता था? मेरे दिल में बचपन से बहुत भारी तड़प थी कि कोई ऐसा गुरु मिले जिनका हम किताबों में जिक्र सुनते हैं।

गुरु दया का सागर होता है, ऐसा कोई दया का सागर गुरु मिल जाए! मैं यह भी कहता था कि वे कैसे लोग हैं जो गुरु के कहे अनुसार नहीं चलते, गुरु से बेमुख हो जाते हैं। भई, हमें गुरु मिल जाए वे जो कहेंगे हम वही करेंगे। बचपन से मेरे अंदर यह लगन थी।

आपको पता है कि सेवक अपनी निन्दा सुन लेता है निरादर भी सह लेता है लेकिन अपने गुरु की निन्दा, गुरु का निरादर नहीं सह सकता। खास करके पवित्र आत्मा का तो मरण ही हो जाता है। एक फिरके के लोगों ने महाराज सावन सिंह जी के खिलाफ किताब ही लिख दी कि इन्होंने संगत के पैसे से ज़मीनें खरीदी हैं और लोगों से पैसे लेकर लंगर चलाते हैं। यह पूर्ण गुरु हैं? सन्तों को तो ऐसी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। आपने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया खामोश रहे। कई प्रेमियों ने आपसे कहा कि आप भी कुछ न कुछ बोलें। महाराज सावन सिंह जी ने कहा, “देखो भई, चुप रहने में ही सन्तों की जीत होती है।

इस बात का बलूचिस्तानी मस्ताना के दिमाग पर बहुत असर हुआ। मस्ताना जी लोगों को बता देना चाहते थे कि महाराज सावन को आप यह कहते हैं कि वह संगत से पैसे लेकर ज़मीनें खरीदते हैं, लंगर चलाते हैं। आप देख लो मैं तो सावन शाह के कुत्ते जैसा भी नहीं, कुत्ते भी मुझसे अच्छे हैं। मस्ताना जी दिन-रात माया बाँट रहे थे। जो आदमी ‘धन्य सावन शाह’ कहता मस्ताना जी उसके गले में नोटो का हार डाल देते थे।

प्यार का सागर

मस्ताना जी उस फिरके के लोगों को बता देना चाहते थे कि जो अपने आपको सावन सिंह जी का एक कुत्ता भी नहीं कह सकता वह कितनी माया का मालिक है। उसके पास माया का कोई अंत नहीं तो महाराज सावन सिंह जी क्या चीज हैं? आप लोगों ने महाराज सावन सिंह जी को नहीं पहचाना।

मैं महाराज सावन सिंह जी के चरणों में ज़्यादा से ज़्यादा गया हूँ। मस्ताना जी की संगत ने महाराज सावन सिंह जी को नहीं देखा था। मैं जब मस्ताना जी के पास जाता तो वह मुझे स्टेज के पास खड़ा करके कहते कि हाँ भई, सारी संगत को बताओ कि सावन सिंह जी कैसे थे? महाराज सावन सिंह जी जैसे थे मैं वैसा ही बयान करता, “आप सुंदर थे, प्यारे थे और हमें आकर्षित करते थे। आप जब बोलते थे उस वक्त जानवर भी मौन होकर खड़े हो जाते थे। चाँद और सूरज आपके हुक्म में थे। आप सूरज को छिपा देते थे, बादल भी आपके आकाश में थे। आपकी पहिना कपड़ा नहीं की जा सकती।”

गुरु दया का सागर होता है, ऐसा कोई दया का सागर गुरु मिल जाए! मैं यह भी कहता था कि वे कैसे लोग हैं जो गुरु के कहे अनुसार नहीं चलते, गुरु से बेमुख हो जाते हैं। भई, हमें गुरु मिल जाए वे जो कहेंगे हम वही करेंगे। बचपन से मेरे अंदर यह लगन थी।

थे वे मान नहीं रहे थे। उन लोगों ने कहा, “भई, यह ज़मीन के अंदर से तो बाहर नहीं निकलता अमेरिकन लोग इसके पास कैसे आएंगे? क्या कभी आदमियों में से भी महक आई है? महक तो फूलों में से आती है। इतना कुछ कैसे हो सकता है?” कोई मानने के लिए तैयार नहीं था।

जब सही वक्त आया, उस महापुरुष ने अपनी मुबारक जुबान से जो लफ़्ज़ निकाले थे वे पूरे होने लगे तो सबको चिंता हुई कि यह क्या होने लगा है? मैं अपने धन्य भाग्य समझता हूँ कि मैं अपने गुरु का हुक्म मान सका, उनकी आज्ञा का पालन कर सका, नहीं तो मन अंदर ही बैठा है दीवार बनकर खड़ा हो जाता है। यह मन हमेशा ही इन्सान को बे-ऐतबारा (अविश्वासी) बनाता है।

जब महाराज सावन सिंह जी ने मस्ताना जी को गुफा बनाकर दी तब महाराज सावन ने कहा, "मैंने तुझे बागड़ का बादशाह बना दिया है। जो लोग नहीं मान रहे ये सब पछताएंगे। तुझे मेरे अन्त समय में अंतिम क्रिया में भी आने की ज़रूरत नहीं।"

मैंने यह जगह अपनी मर्जी के मुताबिक नहीं बनाई। मुझे बचपन से ही दुनिया से अलग रहने की आदत थी। मैं बचपन से जहाँ पर भी बैठा हूँ ज़मीन के नीचे मकान बनाकर ही बैठा हूँ। यह खास जगह उस दयालु कृपाल ने खुद ही अपने हुक्म से बनवाई। आपने अनेकों दफा इस जगह पर अपने मुबारक चरण डाले। उन चरणों के लिए देवी-देवता भी लोचते हैं।

मैंने आपकी याद में, तड़प में काफी समय लगाया था। आपने इस गरीब आत्मा पर दया की। यहाँ आपके मुबारक चरण पड़े हैं। आपने दया करके कहा था, “जो प्रेमी यहाँ रहकर दस दिन भजन-अभ्यास करें वही इस गुफा के दर्शन कर सकते हैं।”

दयालु परमपिता कृपाल सिंह जी ने भी अपने गाँव में उस कमरे को बंद रखा था जहाँ महाराज सावन सिंह जी के चरण पड़े थे। जब खास भजन-सिमरन के समागम होते थे उस वक्त ही प्रेमी उस कमरे के दर्शन कर सकते थे। यहाँ भी वैसे ही उनके ही हुक्म के मुताबिक किया जा रहा है।

आम इन्सान जो एक या दो दिन के लिए आया है, चाहे वह कितना भी प्यारा और कितना भी अच्छा है उसके लिए यह दरवाज़ा नहीं खोला जाता। जो प्रेमी यहाँ दस दिन भजन-अभ्यास करते हैं वही इस जगह के दर्शन कर सकते हैं।

आपने यहाँ पिछले दस दिन भजन-अभ्यास किया है इसलिए इस जगह (पवित्र गुफा) का दरवाजा आपके लिए खोला गया है। यह परमपिता कृपाल के हुक्म के मुताबिक है उन्होंने दया पूर्वक यह अनुमति दी थी कि जो यहाँ दस दिन भजन-अभ्यास करें अपना ध्यान एकाग्र करने की कोशिश करें केवल उन्हीं को इस जगह के दर्शनों की इजाज़त दी जाए।

सबको यह जगह देखने की इजाज़त नहीं है। जो सिर्फ यह जगह देखने के लिए आते हैं हम उनसे कहते हैं कि जो यहाँ कम से कम दस दिन भजन-अभ्यास करते हैं उनको ही इस जगह के दर्शन करने की इजाज़त है।

मैं जब 77 आर. बी. में रहता था तब भी इस जगह को बंद रखा गया और इसकी पवित्रता को बरकरार रखा गया। जो प्रेमी यहाँ रहते थे उन्होंने किसी को भी यह जगह देखने की इजाज़त नहीं

गुफ़ा दर्शन की महानता